GOVERNMENT OF INDIA
NATIONAL LIBRARY, CALCUTTA -

Class No. H
954
Book No. GU8318

N. L. 38.
MGIPC—S1—36 LNL/60—14-9-61—50,000.

Swadeshi Movement Series No. 4.

॥ श्री ॥

॥ स्वदेशकी जय ॥

बाबू गङ्गाप्रसाद गुप्त-लिखित ।

ब्रह्मरूप है हिन्दुस्तान ।
अलख निरञ्जन हिन्दुस्तान ॥
राम कृष्ण [illegible] हिन्दुस्तान ।
जय जय प्यारे हिन्दुस्तान ॥

जिसे

[illegible] जीवनके अध्यक्ष श्रीकृष्ण वर्म्माने
[illegible] व्ययसे प्रकाशित किया ।

H
954
Gu 831 S

॥ काशी ॥

भारतजीवन प्रेसमें मुद्रित और प्रकाशित ।

मार्च, १९०७ ई० ।

प्रथम बार १०००] [मूल्य डेढ़ आना ।
एक

H
954
Gu 831 s

STED

NATIONAL LIBRARY
No. 10915
DATE 5.11.60
CALCUTTA

स्वदेशकी जय।

HAIL MOTHER.

* * * * * *Mother !*
Land of the gald white moonlit nights,
Land of the trees with flowers in bloom.
Land of smiles, land of voices sweet,
Giver of joy, giver of desire.
* * * * * *Mother !*
In Thee all knowledge, Religion Thou,
Thou the heart, Thou the seat of life,
The breath of life in the flesh !
O Mother, the strength of this arm Thine;
Thou the devotion in the heart !
Thine the image consecrate,
Thee weilder of ten arms, Durga Thou.
Thou the Goddess of wealth bower'd in the lotus.
Mother !

भारतभूमिको "स्वदेश" कहनेका सद्भाग्य परमेश्वरने किन मनुष्योंके ललाटमें लिख दिया है? भारतभूमिको मातृस्थानमें समझनेका पवित्र अधिकारी जगंत्-पालक परमेश्वरने किनको बनाया है? और इस भूमिके

अमृत भरे स्तनोंका दिव्य आस्वाद लेकर इसे "हे मातः" "हे माता" इत्यादि कहकर किसने अपनी जिह्वा पवित्र की है?—भाइयो! इस सद्भाग्यसे केवल हमाराही भाग्य अलंकृत है; भारतभूमिको मातृभूमि कहनेका अधिकारी ईश्वरने हमींको बनाया है; इस भूमिको "हे मातः" कहकर हम भारतवासियों हीकी जिह्वा पवित्र हुई हैं; और भारत देशको स्वदेश कहनेका महद्भाग्य हम भारतवासियों के सिवा संसारके किसी दूसरे देशके लोगोंको नहीं है। हम सब हिन्दुस्थानी भारतके सच्चे पुत्र हैं; भारतमाता हमारी जन्मदात्री माता है; वही हमारा पालन करती है; उसीका दूध पीकर हम जीते जागते हैं; और भविष्य में उसीका स्तन पानकर हमारे बालक वृद्धि पावेंगे। इस भूमाताके शरीरमें हमको बढ़ानेवाला दूध परमेश्वर ने हमारे ही लिये उत्पन्न किया है; उस दूधपर हमारा नैसर्गिक अधिकार है; उसपर किसी दूसरे व्यक्तिका हक़ नहीं है। जिस देशमें जो मनुष्य जन्म लेता है उसी देश उसी जन्मदात्री माताके दूधपर उस मनुष्यका अधिकार परमेश्वर निर्माण करता है। भारतमाता तीस करोड़ बालकोंकी प्रसविनी माता है। दूसरी माताओंके बालक हमारे पास केवल खेलनेके लिये आये थे; परन्तु हमारे जैसे भोले और खिलवाड़ी पुत्रोंका आग्रह देखकर हमारी आर्य्यभूमाताने उदार और सहृदय अन्तः-

करणसे उनको भी हमारे साथ अपने स्तनका दुग्ध पान करा दिया। परन्तु यह केवल हमारी माताकी उदारता थी। हमारी माताका स्तन पीनेका उनको कोई हक नहीं था; कारण यह कि इसको स्वयं तीस करोड़ सन्तति हैं; दूसरे बालकोंकी इसे क्यों इच्छा वा आवश्यकता होती? हमारी भारतभूमि वात्सल्यकी देवी है; मूर्त्तिमन्त प्रेमलता है। वेदमें इसका जो यशोवर्णन हुआ है उसके अनुसार यह वास्तवमें अनुभवमें वृद्ध और सौन्दर्यमें तरुण है। हम तीस करोड़ बालकोंपर इसकी समान ममता है; तीस करोड़ कण्ठोंसे "मातृभूमि तुझे नमस्कार है" यह मञ्जुल कलरव सुनकर इसे अपार आनन्द और प्रेम होता है।—ऐसी प्रेममयीको "माता" कहनेका महद्भाग्य जिसके प्रसादसे हमको मिला है उस पारलौकिक आदिशक्ति तथा इस ऐहिक परमेश्वरी आर्यभूमाताको हमारा सदैव प्रणाम है।

आर्यभूमाताके भाग्यकी गणना कौन कर सकता है?—"असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे। सुरतरुवर शाखा लेखनी पत्रमुर्वी॥ लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालम्। तदपि तवगुणानामम्ब पारं न याति॥" इस जगत्के हजारों टुकड़े हैं; परन्तु आर्यभू जैसी रमणीय भूमि दूसरी कौन है? इसका गुण गौरव देखनेके लिये हिमालयपर्वतने अपना मस्तक इतना ऊंचा किया

कि सारी पृथ्वीके प्रदेश दीखने लगे; परन्तु हे भारत-भूमि! तुझसी रमणीयता उसे कहीं नहीं देख पड़ी। भूलोकमें ऐसी सुन्दरता देखकर विजयी हिमालय उत्साहमें भरा हुआ स्वर्गमें पहुंचा; किन्तु हे आर्यमातः! वहां तेरीसी रमणीयताके बदले उसे कुछ औरही दृश्य दिखाई दिया। हिमालयका हिमधवल शरीर देख इन्द्र की अमरावतीमें रहनेवाली अप्सराएँ उससे गले मिलने के लिये एकदम दौड़ आईं। उसी समय अमरावती त्यागकर वे स्वच्छन्दताके साथ हिमालयपर विहार करने लगीं। यह समाचार सुनतेही आश्चर्योत्सुका गिरिजाने गिरिजारमणके सहित अपना निवासस्थान उसी समय हिमपर्वत पर स्थापित किया। हे आर्यमातः! तू ऐसे हिमालयसे शोभित है जो श्रीशङ्करको अपने अस्तित्व का चमत्कार दिखानेके योग्य जान पड़ा। "यं सर्वशैलाः परिकल्प्य वत्सं, मेरौ स्थिते दोग्धरि दोहदक्षे। भास्वन्ति रत्नानि महौषधींश्च, पृथूपदिष्टां दुदुहुर्धरित्रीम्॥" हे आर्यमातः! ऐसे हिमालयसे तू सम्पन्न है। सो, जो भूमाता हिमालय सह्याद्रि और विन्ध्याद्रि जैसे प्रमुख पर्वतोंसे शोभित है उसको हमारा प्रणाम है। हे आर्यमातः! मनुष्योंमें देव श्रेष्ठ होते हैं और सब देवोंमें महादेव श्रेठ होते हैं; परन्तु महादेवके मस्तक पर आरूढ़ भागीरथीने तुझे पवित्र किया है। हे

भूमातः! सिन्धु, सतलज, ब्रह्मपुत्र, गङ्गा, यमुना आदि के रूपमें तू अपने प्रिय बालकोंके लिये स्वर्गीय पयसुधा की अखण्ड धाराएँ बहाती है। सिन्धु और ब्रह्मपुत्र, गङ्गा और यमुना, नर्मदा और गोदावरी, कृष्णा और कावेरी, ऐसी ऐसी तरङ्गिणियोंसे तू सम्पन्न है; सो तुझे हमारा नमस्कार है। हे स्वदेश! हे आर्यभूमि! हे मातृभूमि! जिस प्रदेशमें खिले हुए कमलोंके सिवा लक्ष्मी को कोई दूसरा निवासस्थान प्रिय नहीं है, जिस प्रदेशके हंसोंको मुक्ताफलका चारा मिलता है और जहां मृदुल कमलों हीके जाल बिछे हुए हैं, तू ऐसे मानस सरोवरसे भूषित है।—"इदं तीर्थं समं सौम्यं सुजलं सूक्ष्मबालुकम्। रमणीयं प्रसन्नाम्बु सज्जनानां मनो यथा।"—ऐसे प्रमुख मानस सरोवरसे भूषित होकर मनोरम बनी हुई हे भारतमाता! तू रत्नगर्भा है। यदि संसार भरके जहाज इकट्ठे करके भरे जायँ तौभी तेरे गर्भमें इतना सोना और इतने रत्न उत्पन्न होते हैं कि उन जहाजोंमें न अटें। अपरिमित स्वर्णांसे सुशोभित हे 'स्वर्णभूमि'! तेजोमय रत्नोंसे युक्त हे रत्नगर्भे! तुझको हमारा बारम्बार प्रणाम है।

विश्वामित्रको मोहमें फँसानेके लिये मेनकासे प्रार्थना करानेवाली वसन्तु ऋतु; पृथ्वीको हरे वस्त्रोंसे शोभित करनेवाली वर्षाऋतु; और सोलहों कलाओंसे चन्द्रको

देदीप्यमान करनेवाली शरत् ऋतु है। ऐसी प्रमुख ऋतुओंसे जो ऋतुमती है उस आर्यभूमिकी हम वन्दना करते हैं। जिस प्रकार बालकोंके मुखमें स्तन पहुँचाया जाता है उसी प्रकार पार्वतीके स्तनके समान मधुर आम्रफल और कविताके अधरोष्ठकी तरह सरल द्राक्षलताओंकी उत्पन्न करनेवाली हे स्वदेशभूमि! हम तेरी वन्दना करते हैं।

मनोहर राग रगिनियां गानेवाले सुन्दर मनभावने पक्षियोंकी जो प्रसविनी है; जो ऐसी चम्पककलिकासे सुगन्धित है जिसे देखनेके बाद ब्रह्माने रम्भाकी नाककी बनावट निश्चित की थी; उस विविधविहङ्गमा कुसुमविकसिता भूमाताको हम अनेक बार प्रणाम करते हैं। जिसकी कृपासे अनादिकालसे भारतवासियोंके विस्तीर्ण कुटुम्बको बहुत अच्छे प्रकारकी जीवनशक्ति मिलती है, तथा भविष्यमें भी मिलेगी, उस भूमाताको हमारा प्रणाम है। जो प्रकाशमयी भूमि सब समय सब दिनोंमें शस्यशालिनी रहती है; जिस देशके क्षेत्र सदैव धान्यसे परिशोभित रहते और मानों हाथ उठाकर अभिमानके सहित हास्य करते हैं कि 'सब मनुष्यजातिके उदरपोषणके लिये हम सर्वदा तैयार हैं'; जिस देशकी भूमि हरे भरे खेतों और मीठे जलाशयोंसे जीवधरियोंका सन्तोष करती है; जिस देशके घोड़ोंकी

पीठ परमेश्वर अपने हाथोंसे स्वच्छ करते हैं; जिस देशकी गौवें निरन्तर दूध दिया करती हैं; उस सुभगा सुजला देवीको हमारी वन्दना है। जो देवी प्राकृतिक शोभासे अत्यन्य सुन्दर बनी हुई है; जिसकी अष्ट दिक्पाल इसलिये रक्षा करते हैं कि अधमों और दुष्टोंकी ओरसे उसे त्रास न मिले,—उस भूमाताके चरणोंमें हम अपना मस्तक नवाते हैं।

—***—

(२)

चीन देशके आसपास बड़ी दीवार बनवाकर उसे अधिक दृढ़ करनेका वृथा गर्व करनेवाले चीन देशके बादशाहका गर्व तोड़नेके लिये उत्तर दिशामें प्रकृति देवी ने हिमालय-पर्वत-रूपी अत्यन्त ऊँची और अभेद्य दीवार खड़ी की है और दक्षिण, पश्चिम तथा पूर्व ओर विशाल समुद्रोंसे रक्षा होती है,—ऐसी जो हमारी भूमि-देवी है उसकी हम वन्दना करते हैं। जिस देशकी उत्तर दिशाकी सब स्थलदेवता और दूसरी दिशाओंकी जल-देवता रक्षा करते हैं उस भूमाताके सब क्षेत्रोंकी हम वन्दना करते हैं। हमारी भारतमाताका सर्वत्र जयजय-कार हो।

संसारके हरेक देशको प्रकृतिकी ओरसे कोई न कोई बात मिली रहती है;—जैसे किसी देशके पर्वत बहुत

ऊँचे होते हैं तो किसीमें एक छोटी पहाड़ी भी दिखाई नहीं देती; एकाध देशमें सोनेकी खानियां होती हैं तो दूसरे देशोंमें कोयला भी उत्पन्न नहीं होता; किसी देश की रक्षा समुद्रसे होती है तो दूसरे देशोंमें समुद्रके दर्शन तक नहीं होते; परन्तु हमारी भारतभूमिमें किसी प्राकृतिक वस्तुकी कमी नहीं है। सभी उत्तम, सुन्दर, उपयोगी और प्रशंसनीय चीजें ईश्वरने हमको दी हैं। यह झूठ नहीं, सच है। संसारमें हिमालय जैसा दूसरा पर्वत कौन है? कोहेनूर हीरेकी खानि दूसरे किस देश में है? गङ्गा जैसी नदी और पञ्जाबके समान भूमि अन्य किस स्थानमें है? इस देशमें जिस प्रकार सोनेकी खानियां हैं वैसेही यहां कोयला भी उत्पन्न होता है। इतनी खनिज सम्पत्ति संसारके किसी अन्य देशमें नहीं है। इतनाही नहीं, बल्कि इस देशमें जो जो चीजें हैं उनमेंसे एक एक भी दूसरे देशोंमें पूरी तरह नहीं है। हमारी मातृभूमि सब अद्वितीय वस्तुओंसे सम्पन्न है। हमारा देश प्राकृतिक वस्तुओंका म्यूजियम (Museum) वा पदार्थसंग्रहालय वा अजायबखाना है। यह कोई नहीं कह सकता कि इस देशमें अमुक वस्तु नहीं है। संसार में जो कुछ है वह यहां है और संसारमें जो कुछ नहीं है वह भी यहां है। संसारकी दूसरी जगहोंमें जो बात नहीं है वह परमात्माकी कृपासे हमारी मातृभूमिको

प्राप्त है, यह असाधारण बात है। अत्यन्त उच्च पर्वतों, सुगन्धित पुष्पलताओं, अच्छी भूमि, बड़ी बड़ी नदियों, समुद्र और सरोवरों, रत्नोंकी खानियों तथा विविध राग गानेवाले पक्षियोंसे यह भूमि युक्त है। ऐसी आर्य-जननी भारतभूमिकी हम वन्दना करते हैं।

ऊपर भारतमाताके गुणोंके केवल एक अंशका वर्णन हुआ है,—अर्थात् केवल सुन्दरताका। परन्तु बाहरी सुन्दरताके साथ भीतरी सुन्दरता हो तभी वह सच्ची सुन्दरता है। यदि परमेश्वर किसीकी गोरी सूरत बनावे तो उससे क्या ? सुन्दर रूपवाले मनुष्यके कृत्य भी सुन्दर हों तभी वह माननीय हो सकता है। फ़ारसीका एक कवि कहता है—

"हसीं कसेस्त कि हुस्ने व हुस्न ख़ू दारद।
गुले ख़ुशस्त बशर्ते कि रङ्गो बू दारद ॥"

दृश्य सुन्दर हो, पर कर्म्म पापसे भरे, या नाम बड़ा हो और दर्शन थोड़ा, तो किस कामका ? परन्तु भारतवर्ष देश ऐसा नहीं है। परमात्माने इसका बाहरी भीतरी दोनों रूप सुन्दर बनाया है। इसके अच्छेपनका पता इसके कामोंसे लगता है। उत्तम नदी वही है जो मीठा और निर्म्मल जल दे; उत्तम खेत वही है जो सदा हरा भरा रहे; और उत्तम वृक्ष वही है जो सदैव मीठे रसीले फल उत्पन्न करे। इसी प्रकार उत्तम देश वही है

जिसके पुत्रोंके शरीरमें कोई असाधारण चमत्कार हो। देशभूमिकी सच्ची सुन्दरता वनस्पति, धन, धान्य और रत्नोंकी अपेक्षा उसके पुत्रोंके कृत्योंसे जानी जाती है। जिस देशके पुत्र सत्यावलम्बी और वीर हों वही देश श्रेष्ठ माने जानके योग्य है। यदि ऊपर लिखी बातोंमें भारतमाताके पुत्रोंकी जाँच की जायगी, और उसकी श्रेष्ठता प्रकट करनेके लिये उसके वीर्य्यवान् पुत्रोंके नाम निर्देश किये जायँगे, तो हे चन्द्र और सूर्य्य! तुम्हारा तेज फीका पड़ जायगा। क्योंकि वीरमाता होनेमें भारतमाता केवल इसी लोकमें नहीं वरञ्च चन्द्र और सूर्य्यलोकमें भी सबसे श्रेष्ठ है।

इङ्गलैण्ड, अमेरिका, जापान, चीन आदिकी छोटी छोटी माताओंके साथ भारतमाताकी तुलना करना योग्य नहीं है; क्योंकि अनन्तकालके अगाध समुद्रोंकी बड़ी बड़ी तरङ्गोंमेंसे एक तरङ्ग भी उन्होंने अभी तक नहीं देखा है। जिस समय रोमका नाम कोई नहीं जानता था और ग्रीस देशमें मनुष्योंकी बस्ती तक स्थापित नहीं हुई थी उस समय भारतमाता वीरपुत्रोंकी जननी और मनुष्य-समाजकी अधिदेवी थी। इतना ही नहीं, वरन् जिस समय ईजिप्ट् असीरिया आदि देशोंके लोग अपने शरीरोंमें रङ्ग पोतते थे उस समय यहांकी बड़ी उन्नत अवस्था थी। जिस कालमें संसारकी दूसरी भा-

H1 954 Gul 8310

G 10915 Dt 5.11.60

षाओंमें पांच छः सौ शब्दोंका एक कोष भी नहीं था, उस कालमें हमारे ऋषियोंने संस्कृत भाषाको संस्कृत करके बड़े बड़े सूक्ष्म विचार प्रकट किये थे और इस भाषाको छन्दोबद्ध करके ताल स्वरसे मधुर बना दिया था। परन्तु केवल इतनेसे हमारी भारतभूमिका वीरमाता होना प्रकट नहीं होता । जिस देशमें अनादि कालसे महामुनि और ऋषि उत्पन्न हुए; जो भूमि महर्षियोंके मधुर मनोहर वेदगानसे पवित्र हुई है; उसकी बराबरी कौन कर सकता है? सारे संसारमें सबसे प्राचीन जो ऋग्वेद है वह जिस देशमें तैयार हुआ, उस भूमिके वीरमाता होनेमें सन्देहही क्या? विलायती लोगों ने जिस तत्वका थोड़ा थोड़ा ज्ञान अब पाया है उसे दस हजार वर्ष पहले खोज निकालनेवाले वीर्यवान् ऋषि संसारके दूसरे किस स्थानमें मिल सकते हैं? ऐसे ऋषियोंके तपोवनों और उनके तपसे पवित्र बनी हुई भूमाताके आगे हम अपना मस्तक नवाते हैं।

यह भूमि वशिष्ठ और वामदेवके अभिमन्त्रित जलसे पवित्र हुई है। यहांके होम हवनके धुएँसे देवता भी सन्तुष्ट हुए हैं। होम यज्ञमें आहुति दिये जानेवाले घीके सुवाससे प्रसन्न होकर स्वर्गसे इन्द्र और वरुण न जानें कितनी बार यहां आये है । इस भूमिपर वीर्यवान् और ब्रह्मवेत्ता महर्षि लोग तत्वज्ञान पर वाद-

विवाद् करते थे। ऋग्वेद, अथर्ववेद, यजुर्वेद और सामदेव इसी भूमिके हैं। ब्राह्मणों और उपनिषदोंकी उत्पत्ति इसी देशमें हुई है । तत्वज्ञानका सोता इसी भूमिके पांवों तले बहता है। शुक वशिष्ठदेवादि परब्रह्मवेत्ता ब्राह्मण इसी भूमिमें हो गये हैं । अङ्गिरस, वशिष्ठ, वामदेव, याज्ञवल्क्य, गर्ग आदि नाम सुनकर कौन आनन्दमें मग्न नहीं हो जाता? जो भारतभूमि ऐसे तत्ववेत्ताओंकी माता है उसको हम बारम्बार प्रणाम करते हैं।—न्याय और सांख्यके प्रणेता इसी भूमिके अन्न जलसे बड़े हुए। सांख्यशास्त्रके अद्वितीय प्रणेता कपिल मुनि इसी भारतभूमिकी वन्दना "हे मातः" कहकर करते थे। जिस कपिल मुनिकी वन्दना सारा जगत् करता है, उसने जिस भूमिकी वन्दना "माता" कहकर की, वैसी भूमि जगत्में दूसरी कौन हो सकती है? हे चन्द्र, मङ्गल, बुध आदि ग्रह! क्या तुम्हारे पास भी ऐसी कोई भूमि है?

—***—

(३)

भास्कराचार्य, आर्यभट्ट और वराहमिहिरने भूगोल ज्यौतिष और भूमितिका शोध इसी भूमिका अन्न खाकर किया। भूमिति इसी भूमिमें जन्मी है । त्रिकोणमिति इसी भूमिमें उत्पन्न हुई है । सप्तस्वरोंका उदय

इसी भूमिके कोमल कण्ठोंसे हुआ है । मच्छयन्त्रका आविष्कार इसी भूमिमें हुआ है । संसारको व्याकरण शास्त्र इसी भूमिने अर्पण किया है । सत्शास्त्र-लिपि और वर्णमालाका निर्माण पहले इसी भूमिमें हुआ था । शिल्पशास्त्र इसी देशका है । नाट्यशास्त्र और वैद्यकशास्त्र इसी भूमिमें उत्पन्न हुए । कणाद, कपिल, भास्कर, आर्यभट्ट, वराहमिहिर, भरत, पाणिनि, विश्वकर्म्मा, वाग्भट और गौतम जैसे तेजोवान् शास्त्रप्रणेताओंकी जो भूमि माता है उसको हम साष्टाङ्ग दण्डवत् करते हैं । परन्तु हे तत्ववित् लोगो और शास्त्र बनानेवालो! सारे संसारमें यश पानेके लिये केवल तुम्हीं नहीं उत्पन्न हुए हो । वाल्मीकिकी "सरसा सालङ्कारा सुपदन्यासा" स्वर्णमयी मूर्त्तिको स्वर्ग, मर्त्य और पाताल तक कौन नहीं याद करता? रामायण जैसा रसात्मक काव्य जगत्में कौन है? महाभारतके रचयिता व्यास भारतवर्षके सिवा दूसरे किस देशमें उत्पन्न हुए हैं? संसारके लोगो! तुमको क्या चाहिये? नीतिशास्त्र, तत्वज्ञान, कवित्व, इतिहास, स्टष्टिवर्णन, क्या चाहिये? परम पूज्य व्यासप्रणीत महाभारतमें सबकुछ वर्त्तमान है; इससे सब विषयोंका ज्ञान मिल सकता है ।—"व्यासोच्छिष्टं जगत् सर्वम् ।"—जिसकी कीर्त्तिका डङ्का सर्वत्र बज रहा है उस व्यासकी उत्पन्न करनेवाली यह भूमि है । रामायण

ग्रन्थ हमारा है, महाभारत हमारा है, शाकुन्तल हमारा है, उत्तररामचरित हमारा है। यदि इन ग्रन्थोंमें से एक भी हमारे देशमें होता, तौभी हम जगत्के दूसरे देशोंसे श्रेठ कहे जाते। परन्तु जब ये सब हमारे हैं तब भारतभूमिको छोड़ हम दूसरे किस देशकी जय गावें? रामायण एक क्षीरसागर है, महाभारत दूसरा क्षीरसागर है, शाकुन्तल तीसरा क्षीरसागर है;—जहां इतने क्षीरसागर हैं वहां एकाध क्षीरसागरकी क्या गिनती है? एकाध क्षीरसागरमें रहनेवाले लक्ष्मीकान्तसे हम चौगुने भाग्यशाली हैं। हमारी कवितामें लक्ष्मी है, परन्तु दूसरे देशवालोंकी लक्ष्मीमें कविता कहां है? हमारी कविताके कान्त वाल्मीकि, कालिदास, भवभूति आदिको जिस भूमिके द्वारा दिव्य प्रतिभा प्राप्त हुई है उस महत्प्रभाशालिनी आर्यभूमिकी हम नम्रतापूर्वक वन्दना करते हैं।

हमारी भूमाताके अन्न जलसे केवल काव्यमें ही प्रतिभाकी स्फूर्त्ति नहीं हुई है; धर्मतत्वसे मनुष्यसमाजको यदि कुछ भी लाभ हुआ है तो उसका कारण हमारी ही भूमि है। जगत्के सब धर्म्म यहींसे उत्पन्न हुए हैं; दूसरे धर्म्म वेदकथित धर्म्मके बालरूप हैं। हिन्दूधर्मसे ही गौतम बुद्धने बौद्धधर्म्मकी प्रतिष्ठा की। ख्रीष्ट, मुहम्मदी, नानकी सब हमारे ही धर्म्मसे बने। वैदिक-

धर्म्म इस भूमिका प्राण है; इसकी रक्षाके लिये शङ्कराचार्य, रामानुजाचार्य, माधवाचार्य, वल्लभाचार्य इत्यादि धर्म्मवीर पुरुष हमारीही भूमिमें जन्मे। हमारी भारतमाता अपने सब बालकोंपर समान कृपा रखती है। चाहे कोई परमेश्वर कहे, चाहे कोई अल्लाह पुकारे, चाहे कोई नानकको धर्म्मप्रणेता कहे, चाहे मुहम्मदको, चाहे जीजस क्राइष्टको, चाहे बौद्धको, परन्तु हमारी भारतमाता किसीके साथ अनुदार बरताव नहीं करती। अपने ३० करोड़ बालकोंमेंसे उसे जैसी प्रीति हिन्दुओंके साथ है वैसी ही मुसलमानोंके साथ, वैसी ही ईसाइयोंके साथ और वैसीही बौद्धोंके साथ। इसी प्रकार जैन, शैव इत्यादि धर्म्ममार्गवाले भी उसे उतने ही प्रिय हैं।

हमारी मातृभूमि केवल सत्पुरुषोंकीही उत्पन्न करनेवाली नहीं है; इस भाग्यशालिनीके गर्भसे जितने नररत्न उत्पन्न हुए हैं उतने ही स्त्रीरत्न भी। भरी सभामें ऋषिवृन्दोंको ब्रह्मविचारमें हरानेवाली—वादविवाद करनेवाली—गार्गेयी इसी भूमिमें जन्मी थी। लोपामुद्रा, अहल्या, तारा, मन्दोदरी, दमयन्ती, सावित्री इत्यादि स्त्रियां यहीं हुई थीं। सद्गुण, उदारता, साहस, पातिव्रत्य, दया, प्राकृतिक गम्भीरता और दिव्य सुन्दरताकी मूर्त्ति सीतादेवी इसी भूमिके गर्भसे उत्पन्न हुई थीं। जिस भूमिके उदरसे श्रीजानकी जी जन्मीं उसी

भूमिसे हम भी पैदा हुए—जब यह कल्पना मनको स्पर्श करती है तब अद्भुत आनन्द होता है।

जैसे जिस खेतमें उत्तम अन्न पैदा होता है वही खेत अच्छा माना जाता है वैसेही जिस भूमिमें उत्तम स्त्री पुरुष जन्म लेते हैं वही श्रेष्ठ माना जाता है। इस सिद्धान्तके अनुसार जब हम भारतभूमिकी श्रेष्ठताका पता लगाते हैं तब क्या जान पड़ता है? अङ्गिरस, गर्ग, वसिष्ठ, वामदेव, याज्ञवल्क्य, जनक आदि महान् तत्त्ववेत्ता;-कणाद, कपिल, भास्कर, आर्यभट्ट, वराहमिहिर, भरत, पाणिनि, वाग्भट, चरक इत्यादि शास्त्रकर्त्ता; व्यास, वाल्मीकि, कालिदास, भवभूति आदि कविता देवीके भक्त;—गौतम बुद्ध, शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, गुरु नानक इत्यादि धर्म्मसंस्थापक;—श्रीराम, नल, युधिष्ठिर जैसे रंजनशील राजे;-अर्जुन कृष्ण और कर्ण जैसे अतिरथी और महारथी;-चन्द्रगुप्त, शालिवाहन, अशोक और विक्रमादित्य जैसे साम्राज्य-संस्थापक;-शुक्राचार्य और हरिश्चन्द्र जैसे महान् सद्गुणी; गार्गेयी, लोपामुद्रा, अहल्या, तारा, मन्दोदरी, सावित्री और सीता जैसी धर्म्मनिष्ठा कर्म्मनिष्ठा युवतियां; ये सब इसी देशमें हुए हैं। ऐसे देशकी बराबरी दूसरा कौन देश कर सकता है? ये थोड़ेसे नाम केवल उदाहरणके लिये लिखे गये; परन्तु भारतका प्राचीन इतिहास नहीं मिलता; जो है

वह ठीक रीतिसे सङ्कलित नहीं है; और जो संगृहीत है उसे पूरी तरह देखनेकी शक्ति नहीं है। अतएव ऊपर जो कुछ लिखा है उसे सम्पूर्ण न समझना चाहिये। ऊपरका वर्णन हमारे इतिहासका पूर्वार्द्ध है। आधुनिक समयके नरनारीरत्नोंका वर्णन अभी बाकी है। चित्तौड़के प्रतापसिंह, उदयपुरके उदयसिंह, बूंदीके हाड़ाराव नारायणदास, चौहाणकुलभूषण महाराज पृथ्वीराज, बुन्देलखण्डके छत्रशाल, बङ्गालके प्रतापादित्य, रायगढ़के महाराज शिवाजी, गवालियरके महाराज सिन्धिया, गुजरातके राजा भोला भीम तथा बनराज चावड़ो, दक्षिणके महाराष्ट्रीय मराठे और पेशवा राजे, झांसीकी रानी लक्ष्मीबाई और पंजाबकेसरी महाराज रणजीतसिंह आदि अनेक नरेश, अनेक भक्त, अनेक धर्म्मवीर कर्म्मवीर युद्धवीर और योगवीर पुरुष इस देशमें हो गये हैं।

हे आर्यवसुन्धरे ! तू सुभगा है, सुजला है, सुवर्णा है, सुरत्ना है; तेरे पुत्र सब विद्याओंसे विभूषित हैं। हे मातः, हे आर्यमातः ! तेरे चरणोंमें हम सिर झुकाते हैं। हे ऋतुमति, हे वसुमति ! हे सुललिते, सुफलिते ! शतसहस्र बार हम तुझे प्रणाम करते हैं। हे विविध-विहङ्गमे ! कुसुमे ! तुझे हमारी वन्दना है। हे निसर्गरम्ये, हे निसर्गरञ्जिते, हे पुराणी देवि, युवति, पुरन्ध्रि ! तुझे हमारी

वंदना है। हे प्रभामयि और धर्म्ममयि! हे ऋतुमति और वीर्यवति! तुझे हमारी वंदना है। हे स्वातंत्र्य-तिलकभूमि, तुझे हमारी वंदना है, कोटि कोटि नम-स्कार हैं। हे मातृभूमि! स्वदेश! नारद, तुम्बर, व्यास, बाल्मीकि जैसे समर्थ भक्त तेरे गुण गा गये; हम तुझे साष्टाङ्ग दण्डवत् करते हैं। हे सकल-गुणनिधे! हे शी-लवति, पुण्यवति, ईश्वरी! हे द्वयत्रीसकोटिभुजे! तेरे आगे हम बारम्बार सिर झुकाते हैं। जय! मातृभूमिकी जय! स्वदेशकी जय! जय—जय!

परज।

"बन्दहु सब मिलि हिन्दुस्थान।
पूर्व समयको सांचो गौरव।
करे गिरा मम सुन्दर गान॥
धन बल बुद्धि बिपुल यश गाथा,
मगन होय सुन सभा महान्।
बङ्ग बिहार अयोध्या गुर्जर,
बाम्बे उत्कल राजपुतान॥
सिक्ख पार्सी जैन इसाई,
हिन्दू सेखरु मुगल पठान।
सब भाषनमहँ सब मिलि गावहु,

जय जय प्यारे हिन्दुस्थान ॥
(सब मिलके) हर हर हर हर, हिन्दुस्थान !
दादर हुरमुज, हिन्दुस्थान !
अल्ला अकबर हिन्दुस्थान !
जय जय प्यारे हिन्दुस्थान !!!

एक होंय सब भारतवासी,
फूट बैरकी छोड़ें बान ।
रहैं परस्पर प्रेमभावसों,
दुख सुख सबमें एक समान ॥
बङ्ग बिहार अयोध्या गुर्जर,
बाम्बे उत्कल राजपुतान ।
सिक्ख पार्सी जैन इसाई,
हिन्दू सेखरु मुगल पठान ।
सब भायनमहँ सब मिलि गावहु,
जय जय प्यारे हिन्दुस्थान ॥
(सब मिलके) हरे मुरारे हिन्दुस्थान !
जय जिहोवा हिन्दुस्थान !
अल्ला अकबर हिन्दुस्थान !
जय जय प्यारे हिन्दुस्थान !

साहस औ उत्साह बढ़ै नित,
होय उतेजित जनमन प्रान ।

आलस निद्रा त्यागि उठहु सब,
करहु देशको अब कल्यान ॥
बङ्ग बिहार अयोध्या गुर्जर,
बाम्बे उत्कल राजपुतान ।
सिक्ख पार्सी जैन इसाई,
हिन्दू सेखरु मुगल पठान ।
सब भाषनमहँ सब मिलि गावहु,
जय जय प्यारे हिन्दुस्थान ॥
(सब मिलके) ब्रह्मरूप है हिन्दुस्थान ।
अलख निरञ्जन हिन्दुस्थान ।
अल्ला अकबर हिन्दुस्थान ।
जय जय प्यारे हिन्दुस्थान ॥

इति ।

National Library,
Calcutta-27.